प्रातः सभा 1-8-68 ओमशान्ति पिताश्री शिव बाबा याद है?

रूहानी बाप बैठ रूहानी बच्चों को समझाते हैं। अभी तुम यहां शरीर के साथ बैठे हो। जानते हो इस मृत्यु-लोक मेंयह अन्तिम शरीर है। फिर क्या होगा। फिर बाप के साथ शान्तिधाम में इकट्ठे होंगे। यह शरीरनहीं होगा। फिर स्वर्गमें आवेंगे तो नम्बरवार पुरुषार्थ अनुसार। सभी सभी इकट्ठे नहीं आवेंगे। यहराजधानी स्थापन हो रही है ना। जैसे बाप ज्ञान का सागर है, नालेज का सागर है, शान्ति का सागर है। बच्चों को भी ऐसा शान्ति का सागर सुख का सागर बना रहे हैं। फिर जाकर शान्तिधाम मेंविराजमान होना है। तो बाप को, घर को, सुखधाम को याद करना है। यहां तुम जितना2 इस अवस्था में बैठते हो तुम्हारे जन्म-जन्मान्तर के पाप भस्म होते जाते हैं। इसको कहा जाता है योगाग्नि। सन्यासी कोई सर्वशक्तिवान से योग नहीं लगाते हैं। वह तो रहने के स्थान ब्रह्म से योग लगाते हैं। वह है तत्व योगी। ब्रह्म अथवा तत्व से योग लगाने वाले। यहां जीवात्माओं का खेल होता है। वहां स्वीटहोम में सिर्फ आत्मायें रहती हैं। उस स्वीटहोम में जाने लिए सारी दुनिया पुरुषार्थ करती है। सन्यासी भी कहते हैंहम ब्रह्म में लीन हो जावें। ऐसे नहीं कहते कि हम ब्रह्म में जाकर निवासकरें। यह तो बच्चे अब समझ गये हैंभक्ति मार्ग में कितने खिट2 सुनते रहते हैं। यहां तो बाप आकर सिर्फ दो अक्षर ही सुनाते हैं। जैसे मंत्र जपते हैं ना। कोई गुरु को याद करते हैं। स्टुडन्ट टीचर को याद करते हैं। अभी तुम बच्चों को तो सिर्फबाप को और घर को याद करना है। बाप से तुमवरसालेते हो सुखधामऔर शान्तिधाम का। वही दिल में याद रहता है। मुख से बोलना कुछ भी नहीं है। बुधि से से तुम जानते होशान्तिधाम के बाद है हीसुखधाम। जो×पहले मुक्ति ×में फिर हम जीव मुक्ति में जावेंगे। मुक्ति-जीवनमुक्ति अथवागति सदगति एक ही बात है। बाप बच्चों को बार2 समझाते हैंटाईम वेस्ट न करना चाहिए। जन्म-जन्मान्तरके पापों का बोझा सिरपर है। इस जन्म के पापों की तो स्मृति रहती है। सतयुग में यह बातें होती ही नहीं। यहां बच्चे जानते हैं जन्म-जन्मान्तर के पापों का बोझा नम्बरवन है। विकार का विकर्म तो तुम जन्म-जन्मान्तर करते आये हो, और बाप की निन्दा भी की है। बाप जो सब को सदगति देते उनकी कितनी निन्दा की है। यह सभी ध्यान में रखना है। अभी जितना हो सके बाप को याद करने का पुरुषार्थ करना है। वास्तव में वाह सदगुरु कहा जाता है। गुरु भी नहीं। मुक्ति जीवनमुक्ति भी वह देते हैं ना। वह सभी हैं अनेकानेक गुरु। वह है एक सद्गुरु। तुमलोगों ने गुरु तो बहुतकिये हुये हैं। हर जन्म में 2-3-4 गुरु करते हैं। गुरु कर के फिर और2 जगह भी जाते हैंकि शायद यहांसे अच्छा रास्ता मिल जाये। कोशिश करते रहते हैं× और2 गुरुओं से। परन्तु मिलता कुछ भीनहीं। अभी तुम बच्चे जानते हो अभी तो यहां रहने का नहीं है। सभी को जाना है शांतिधाम। बाप तुम्हारे निमंत्रण पर आये हैं। तुमको याद दिलाते हैं। तुमने हमको क्या कहा है कि आओ हमको पतित से पावन बनाओ। पावन शान्तिधाम भी है तो सुखधाम भी है। बुलाते हैंहमकोघर ले जाओ। घर सभी को याद है। आत्मा पट्से कहेगी हमारा निवास स्थान परमधाम है। परमपिता भी परमधाम में रहते हैं। हम भी परमधाम में रहते हैं। अभी बाप ने समझाया है तुम पर बृहस्पति की दशा बैठी हुई है। यह है बेहद की बात। बेहद की दशा सभी पर बैठती है। यह भीतुम अभी समझते होयह चक्र फिरता रहता है। हम ही सुख से दुःख में, फिर दुःख से सुख मे आते हैं। शान्तिधाम सुखधाम फिर यह है दुःखधाम। यह भी अभी तुम बच्चों को बाप ने समझाया है। मनुष्य तो कुछ भी समझते नहीं। बुधि में ही नहीं बैठता है। अभी बाप जीते जीमौत सिखला रहे हैं। परवाने शमा पर फिदा होते हैं ना। कोई तो उस पर आशुक हो चले जाते हैं। फेरी पहन चले जाते हैं। कोई शमा पर फिदा होजाते हैं। यह भी बैटरी है ना। सभी का बुध योग उस एक से है निराकार बाप से जैसे बैटरी लगी हुई है। उनको याद करने से उनकी बैटरी चार्ज होती जाती है। तुम बच्चों को थोड़ी मुश्किलात होती है। इस(ब्रह्मा) आत्मा को तो बहुत नज़दीक है। तो बहुत सहज होता है। फिर भी इनको पुरु० तो करना पड़ता है। जितना तुम बच्चों को करना पड़ता हैयह जितना नजदीक हैंउतना फिर बोझा भी बहुत है। गायन भी है जिनके माथे मामला ... इनके उपर तो बहुत मामलेहै ना। कितनी खिट2 के [illegible]

बाप तो है ही सम्पूर्ण। इनको सम्पूर्ण बनना है। इनकोसभीकीरेखदेख बहुत करनी पड़ती है। भल दोनो इकट्ठे ह तो भी ख्याल तो होता है ना। बच्चियों पर कितनी मार पड़ती है। तो जैसे किदुःख होता है। कर्मातीत अवस्था तो पिछाड़ी मेंहोगी। तब तक ख्याल जरूर होता है। बच्चों की चिट्ठी नहीं आती है तो भी ख्याल होता हैबिमार तो नहीं है। सर्विस का समाचार आने से बाप जरूर खुश होंगे। उनको याद करेंगे। बाबा इस तन से सर्विस करते हैं, कब मुरली थोड़ी चलती है, खांसी होती है तो बच्चों को कितना ख्याल हो पड़ता है, फिर भी शिव बाबा का रथ है ना। यूं तो भल दो चार रोज मुरली न भी आये तुम्हारे पास पायन्ट्स रहती है वह सुना सकते हो। जैसे डाक्टर्स, बैरीस्टर्स आदि पास पायन्ट्स रहती है ना। तुम्हारे मेंफिर हरेक को डयरी देखनी चाहिए। बैजपर भी तुम बहुत अच्छा समझा सकते हो। जब आदी सनातन देवी देवता धर्म था तो और कोई धर्म नहीं था। झाड़ भी जरूर साथ में होना चाहिए। वैराईटी धर्मों का झाड़ समझाना होता है। पहले2 एक आदी सनातनधर्म देवी देवता धर्म था। विश्व में सुख शान्ति पवित्रता थी। बाप से ही वरसा मिलता है। क्योंकि बाप शांति का सागर सुख का सागर ... है ना। आगे तुम भी कुछ नहीं जानते थे। अभी तुम बाप से जैसे बाप की बुधि में यह सब हैवैसे तुम भी बनते हो। सुख का शान्तिका सागर तुम भी बनते हो। अपना पोतामेल देखना है। किस में कमी है। मैं बरोबर प्रेम का सागर हूं। ऐसी कोई चलन तो नहीं हैजिससे कोई नाराज होता है। अपन पर नजर रखनी है। ऐसे मत समझना कि बाबा आर्शीबाद करेंगे तो हम यह बन जावेंगे। नहीं। बाप कहते हैं ड्रामा अनुसार मैं अपने समय पर आता हूं। मेरा यह कल्प2 का प्रोग्राम है। यह ज्ञान दूसरा कोई दे न सके। बाप सद टीचर सदगुरु सत बाप एक ही है। यह भी पक्का निश्चय है तो तुम्हारी विजय है। इतने अनेक धर्म जो हैं उन सभी का विनाश तो होता ही है। जब सतयुग सूर्यवंशी घराणा था तो और कोई दूसरा घराणा नहीं था। फिर भी ऐसा ही होगा। सारा दिन अपने से ऐसे2वातें करते रहो। ज्ञान की पायन्ट्स अन्दर में टपकना चाहिए। खुशी रहनी चाहिए। बाप में जो नालेज हैवह हमको भी मिल रही है। इसको धारण करना है। इसमें टाईम वेस्ट न करना चाहिए। रात को भी टाईम मिलता है। देखते हैं आत्मा आरगन्स से काम करते2 थक जाती है तो फिर सो जाती है। वह है हद का थक। अभी तुम्हारा यह है बेहद का अथक। बाप तुम्हारे भक्ति के सभी थक दूर कर देते हैं। अथक बना देते हैं। जैसे रात को आत्मा थक जाती हैतो शरीर से अलग हो जाती है। जिसको नींदकहा जाता है। सोता कौन है? आत्मा के साथ कर्मेन्द्रियां भी सो जाती है। तो रात को सोने समय भी बाप को याद कर, ऐसे2 ख्यालात करते सो जाना है। हो सकता है पिछाड़ी मेंतुम रात दिन नींद को जीतने वाले बन जाओ। फिर याद में ही रहेंगे। बहुत खुशी रहेंगी। 84 के चक्र को फिराते रहेंगे। उवासी या पिनकी आद भी नहीं आवेंगी। हे नींद के जीतने वाले बच्चों! कमाई मे कल नींद नहीं आती है। जब ज्ञान में मस्त हो जावेंगे तो तुम्हारी वह अवस्थारहेगी। तब बाप कहते हैं हे नींद के जीतने वाले बच्चों। यहां तो तुम थोड़ा टाईम बैठते हो तो कब उवासी वा पिनकी न आना चाहिए। और2 तरफ अटेन्शन जाने से फिर उवासी पिनकी आवेंगी। यह भी ध्यान में रखना है कि हमको आप समान बनाना है। प्रजा तो चाहिएना। नहीं तो प्रजा कैसे बनावेंगे। धन दिये धन ना खुटे। दूसरों को समझावेंगे दान देते रहेंगे तो कब खुटेंगे नहीं। नहीं जमा नहीं होगा। मनुष्य तो बहुत मनहुस भी होते हैं। धन परबहुत लड़ाई झगड़े हो जाते हैं। यहां तो बाप कहते हैं तुमको अविनाशी ज्ञान देताहूं। तुम फिर औरों को देते रहो। इसमें मनहुस न बनना है। दान न देते हैं गोया हे नहीं। यह कमाई ऐसी है किसको लड़ने आद की बात नहीं। इसको कहा जाता है गुप्त। तुम हो इनकग्रगोनिटो वारियर्स। 5विकारों साथ तुम लड़ते हो। तुमको अननोन वारियर्स कहा जाता है। प्यादे लश्कर बहुत होते हैं। यहां भी ऐसे हैं। प्रजा बहुत है। बाकी कैप्टनमेजर आद सभी हैं। तुम सेना हो। इसमें भी नम्बरवार हैं। बाबासमझेंगे यह कमान्डर है। यहे मेजर है। महारथी घोड़े सवार है ना। यह तो बाप ही जानते हैं। तीन प्रकार के समझाने वाले हैं। तुम व्यापर करते हो —

1-8-68

1-8-68

अविनाशी ज्ञान रत्नों का। जैसे वह भी व्यापार सिखाते हैं ना। गुरु चला जाता है तो उनके पिछाड़ी चेले चलाते हैं। वह है स्थूल यह फिर है सूक्ष्म। अनेक प्रकार के धर्म हैं। हरेक की अपनी2 मतें हैं। तुम सुन भी सकते हो। वह लोग क्या सिखलाते हैं। क्या2 सुनाते हैं। चिन्मयानन्द सुनाते भी तो गीता ही हैं। वहां गीता फिर अंग्रेजी में सुनाते हैं। कितने बड़े2 आदमी जाते हैं। इनको भी गीता का बहुत अभ्यास था। इनका रथ बहुत ही मजे से बैठ सुनाते थे। ग्रंथ का एक श्लोक=उठाकर फिर उसका अर्थ बैठ समझाते हैं ना। डिटेल समझाते हैं। वह बात अलग है। यह तो है 84 के चक्र को समझना। वह भी तुमको समझाया जाता है। तुम ही 84 जन्म लेते हो। तुम बच्चों को ही बाप आकर के वर्सा देते हैं। यह ड्रामा में नूंध है। अभी कलियुग अन्त तक भी आत्मायें आती रहती हैं। वृद्धि को पाती रहती हैं। जब तक बाप यहां है संख्या बढ़ती ही जाती है। फिर इतने सभी रहेंगे कहां। खावेंगे कहां वह सभी हिसाब रखना पड़ता है ना। मनुष्य तो बिल्कुल घोर अंधियारे में हैं। बाप तो जानते हैं समय बिल्कुल थोड़ा है। वृद्धि होते2 भी कितने मनुष्य हो जाते हैं। कितने मकान आदि चाहिए। वहां तो इतने मनुष्य होते ही नहीं। खाने वाले ही थोड़े। सभी अपने गति में रहते हैं। अनाज रखकर क्या करेंगे। वहां बरसात आदि के लिए यज्ञ नहीं करना पड़ता है जैसे कि यहां करते हैं। अभी बाप ने यह ज्ञान यज्ञ रचा है। बच्चे समझते हैं सारी पुरानी सृष्टि इसमें स्वाहा हो जावेगी। यह है बेहद का यज्ञ। वह लोग हद के यज्ञ रचते हैं। बरसात के लिए यज्ञ किया अच्छा बरसात पड़ी तो खुश हो गये। यज्ञ की सफलता हुई। न पड़ने से अनाज नहीं होता। अकाल पड़ जाता। भल यज्ञ आदि रचते हैं परन्तु वर्षा को पड़ना न है तो कर ही क्या सकते। फिर फेमन हो जाती है। आफतें तो आनी ही हैं। मुसलधार बरसात, अर्थक्वेक यह सभी होना है। ड्रामा के चक्र को तुम बच्चों ने समझा है। यह चक्र भी बहुत बड़ा होना चाहिए। तुम्हारी एडवरटाईज बड़े2 स्थानों में लगी हुई होंगी तो बड़े2 लोग पढ़ेंगे। समझ जावेंगे बरोबर हम अभी पुरुषोत्तम संगम युग पर खड़े हैं। कलियुग में है बहुत मनुष्य। सतयुग में बहुत थोड़े होते हैं। तो जरूर बाकी इतने सभी खत्म हो जावेंगे। तुम्हारे बुद्धि में भी पहले यह नहीं था। अभी तुम समझते हो नई दुनिया में होते ही हैं थोड़े मनुष्य। उनको कहा जाता है सतयुग। अभी है कलियुग। यह तो जानना होता है। मनुष्यों की बुद्धि में तो कुछ भी नहीं आता है शिव जयन्ति माना हो स्वर्ग की जयन्ति। ल०ना० की जयन्ति। बात तो बड़ी सहज है। शिव जयन्ति मनाई जाती है वह है बेहद का बाप। उसने ही स्वर्ग की स्थापना की थी। कल की बात है। हम स्वर्गवासी थे यह तो बहुत ही सहज बात है। बच्चों को अच्छी रीत समझकर और समझाना है। खुशी में भी रहना है। अभी हम सदैव के लिए सभी बिमारियों से छूटकर 100% हेल्दी बनते हैं। बाकी थोड़ा समय है। भल कितने भी दुःख मौत आदि होंगे तुम उस समय बहुत ही खुशी में होंगे। तुम जानते हो मौत तो होना ही है। कल्प2 का यह पसारा है। फिकर कोई नहीं होती। जो पक्के2 हैं वह कब हाय हाय न करेंगे। मनुष्य कोई का आपरेशन आदि देखते हैं तो बेहोश हो जाते हैं। अभी तो कितना बड़ा मौत होगा। तुम बच्चे समझते हो हमारे लिए यह होना है। गायन भी है भिरवा मौत ... इस पुरानी दुनिया में तो बहुत ही दुःख उठाया। अभी नई दुनिया में जाना है। इस समय की ही बात है। अति इन्द्रिय सुख पूछना हो तो गोप गोपियों से पूछो। जरा भी डर की बात नहीं। तुमको सभी फिक्रों से फारग बनाते हैं। जितना याद की यात्रा में रहेंगे वही निडर रहेंगे। निडर निर्भय, बनना है। बाप को थोड़े ही भय होगा। बाप तुमको भी आप समान निर्भय बनाते हैं। तुम जब देवता बन जावेंगे तो तुम्हारी महिमा अलग हो जावेगी। अभी जो महिमा बाप की है वही तुम्हारी महिमा है। तुम फिर उस महिमा के लायक बन जावेंगे। बाप बच्चों को सभी वर्सा देकर फिर चले जाते हैं। यह तो सहज बात है समझने की। अच्छा आज भोग है।

अच्छा मीठे 2 सिकीलधे बच्चों को रूहानी बाप व दादा का याद प्यार गुडमार्निंग। रूहानी बच्चों को रूहानी बाप का नमस्ते। (वर्षा बहुत जोर-शोर से पड़ रही है रात-दिन। ठंडी2 हवायें भी काफी लग रही हैं। मतलब तो बरसात की अफुल सीजन आगई है। अच्छा।)